केन्द्र:

दिनांक:

हरिनाम दीक्षा के लिए औपचारिक संस्तुति

सेवा मे (परम पूज्यनीय श्रील जयपताका स्वामी महाराज)

कृपापूर्वक मेरा विनम्र प्रणाम स्वीकार कीजिए। श्रील प्रभुपाद की जय हो।

(   ) को हरिनाम दीक्षा के लिए संस्तुति देकर मुझे बहुत खुशी है। मेरी पूर्ण जानकारी के अनुसार हरिनाम दीक्षा के लिए प्रभुजी/माताजी ने जरूरी योग्यता हासिल कर ली है। खासतौर पर पिछले 12 महीनों से प्रभुजी/माताजी अनुकूल भक्तिमय सेवा में लगे हुए हैं, सोलह माला का जप नियमित रूप से कर रहे हैं और चार नियमों का कड़ाई से पालन कर रहे हैं। प्रभु जी/माता जी को कृष्ण भावनामृत का तत्वज्ञान, इस्कान की रूपरेखा और उद्देश्य के बारे में पर्याप्त जानकारी है, जिसकी दीक्षा के लिए आवश्यकता है और इस्कॉन कानून के अर्न्तगत परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए जिसका निर्धारण किया गया है। प्रार्थी ने पिछले 6 महीनों से आपकी शरण स्वीकार की है। इन योग्ताओं के बारे में या तो मैने खुद निरीक्षण किया है या फिर विश्वसनीय स्त्रोतों से सुना है ।

आपका सेवक

नाम

उपाधि

हरिनाम दीक्षा उम्मीदवारों के लिए विस्तृत जाँच सूचि (India Ver. 3)

यह जाँच सूचि शरण ग्रहण करने के बाद दी जानी चाहिए। प्रार्थी को इसे 6 महीने के भीतर या उससे ज्यादा समय में (जितना समय उन्हें हरिनाम दीक्षा के लिए तैयार होने में लगेगा) पूरा भर लेना चाहिए। सीखने के लिए जितनी मदद की आवश्यकता है, वह उन्हें प्राप्त करनी चाहिए।

नामः...आपने किसी दिनांक को गुरू की शरण ली?....................

हरिनाम दीक्षा की संस्तुतिः TP ....नाम हट्टः...

हरिनाम दीक्षा के लिए संस्तुति किस दिनांक को मिली?.................................स्थानः..............................

क्र.सं.	व्यवहारिक ज्ञान और आचरण	Okay?	दिनांक
1.	6 महीने या उससे ज्यादा समय से गुरू की शरण ली (कब से)		
2.	1 साल या उससे ज्यादा समय से नियमित 4 नियमों का पालन (कबसे)		
3.	1 साल या उससे ज्यादा समय से नियमित 16 माला का जप		
4.	हर रोज सुबह जल्दी उठ कर मंगल आरती करते हैं या नियमित रूप से मन्दिर में उपस्थित रहते है। (घर पर भी कर सकते हैं)		
5.	भगवान कृष्ण को भोग अर्पित करने की विधि और मन्त्र जानते है।		
6.	गुरू और श्रील प्रभुपाद का नाम और उनके प्रणाम मंत्र जानते है।		
7.	ऑल्टर में गुरू परम्परा को पहचान सकते है और उनके उचित नाम दे सकते हैं।		
8.	तिलक धारण करते हैं और विष्णु तिलक लगाने के साथ स्थान और मन्त्र जानते हैं।		
9.	नियमित तौर पर मन्दिर में उपस्थित होते हैं या नाम हट्ट सभा में जाते हैं या कृष्ण-सेवा करते हैं।		
10.	12 महीनों से ज्यादा समय से भक्तिमय सेवा के प्रति स्थिर कर्तव्यपरायणता प्रदर्शित की है।		
11.	नियमित तौर पर सुबह जल्दी स्नान करते हैं और वैसे भी साफ- सुथरा रखते हैं।		
12.	श्रील प्रभुपाद की छोटी पुस्तकें और उनकी जीवनी (छोटी वाली) पड़ी है। (अगर पढ़े-लिखें नही हैं, तो इन विषयों के बारे में सामान्य ज्ञान प्राप्त करें।)		
13.	भगवदगीता यथारूप तात्पर्य के साथ कम से कम दो बार (तीर बार हो तो ज्यादा अच्छा) पड़ी है। (अगर पढ़े-लिखें नही हैं, तो इन विषयों के बारे में सामान्य ज्ञान प्राप्त करें।)		
14.	श्रीमदभागवतम का पहला स्कन्ध तात्पर्य के साथ कम से कम एक बार पड़ा		

	है। (अगर पढ़े-लिखें नही हैं, तो इन विषयों के बारे में सामान्य ज्ञान प्राप्त करें।)		
15.	भगवान चैतन्य महाप्रभु का जीवन और उनकी शिक्षाएँ (छोटी पुस्तक) पड़ी है। (अगर पढ़े-लिखें नही हैं, तो इन विषयों के बारे में सामान्य ज्ञान प्राप्त करें।)		
16.	भक्ति-रसामृत सिन्धु, पहला भाग एक बार पड़ा है। (अगर पढ़े-लिखें नही हैं, तो इन विषयों के बारे में सामान्य ज्ञान प्राप्त करें।)		
17.	हरिनाम दीक्षा के लिए तत्वज्ञान की मान्यता प्राप्त परीक्षा 60% अंकों के साथ उत्तीर्ण की है। (अगर नही तो वह तत्वज्ञान की जाँच-सूचि को 90% पूरा करें)		
18.	वैष्णवों के प्रति अपराध और भक्तों की व्यर्थ निन्दा करने से दूर रहते हैं।		
19.	आपका भोजन बनाने वाला दीक्षित है या कम से कम शाकाहारी है।		
20.	कृष्ण प्रसादम के अतिरिक्त और कुछ खाने से बचते हैं। (आपातकालीन स्थिति के अलावा)		
21.	वैष्णवों सिद्धान्तों के विरूद्ध, जीविका के लिए कार्य या कोई और काम-काज नही है। (माँस बेचना, नशे के पदार्थ बेचना, वेश्यावृत्ति इत्यादि)		
22.	केवल इस्कॉन के प्रामाणिक आध्यात्मिक प्रवचन और प्रचार कार्यक्रम सुनते हैं।		
23.	गुरू पूजा, ''संसार दावानल'' कीर्तन और तुलसी प्रणाम-मंत्र जानते हैं।		
24.	कम से कम तीन महीने में एक बार आध्यात्मिक गुरू से सम्पर्क करते हैं, लिख कर या व्यक्तिगत तौर पर		
25.	आपने अपने क्षेत्र के मन्दिर अध्यक्ष से लिखित रूप में हरिनाम - दीक्षा के लिए स्वीकृति ली है।		
26.	वैष्णव सदाचार का कोर्स किया है (जहाँ उपलब्ध हो)		
27	अगर गृहस्थ नही हैं, तो सन्यास आश्रम के नियम जानते हैं और व्यक्तिगत तौर पर उनका उचित अनुसरण करने का प्रयास कर रहे हैं।		
28.	अगर ग्रहस्थ हैं , तो गृहस्थ जीवन के नियम जानते हैं और उन्हें व्यक्तिगत तौर पर व्यवहार में लाने का प्रयास कर रहे हैं और छोटे बच्चों को एक कृष्ण भावनामृत तरीके से पाल रहे हैं।		

तत्वज्ञान जाँच सूचि (दिए गए प्रश्नों का 90-100% उत्तर जानते हैं, अगर विस्तृत तत्वज्ञान परीक्षा उत्तीर्ण नही कर पाए)

1.	प्रामाणिक आध्यात्मिक गुरू की क्या योग्यताएँ है?		
2.	एक प्रामाणिक गुरू से हरिनाम -दीक्षा स्वीकार करने के बाद, उसके आगे के मन्त्र किससे स्वीकार करने चाहिएँ?		
3.	कोई गुरू की भगवान के समान पूजा क्यों करता है? क्या गुरू भगवान हैं?		
4.	प्रामाणिक गुरू किस प्रकार स्वयं को भगवान कृष्ण और शिष्य के सम्बन्ध में देखते हैं?		
5.	क्या आप विश्वास करते हैं, कि आध्यात्मिक गुरू परम सत्य बोलते हैं? यह कैसे सम्भव है कि जो उपदेश भगवान कृष्ण ने 5000 साल पहले दिया, वही आज आध्यात्मिक गुरू प्रस्तुत कर रहे हैं?		
6.	शास्त्रों के अनुसार, आध्यात्मिक गुरू का त्याग कब करना चाहिए?		
7.	एक शिष्य की क्या योग्यताएँ और जिम्मेदारियाँ हैं?		
8.	श्रील प्रभुपाद की इस्कॉन में क्या अद्वितीय स्थिति है? ऐसा कहा जाता है कि हरिनाम दीक्षा स्वीकार करने के पश्चात् दीक्षार्थी गुरू परम्परा से जुड़ जाता है। क्या आप श्रील प्रभुपाद के निर्देशों के अनुसार सेवा करने के लिए दृढ़- संकल्प हैं?		
9.	आप भगवान कृष्ण को परम भगवान क्यों स्वीकार करते हैं?		
10.	भगवान कृष्ण के पवित्र नाम की महिमा के बारे में कुछ बताएँ। हम हरे कृष्ण महा- मंत्र का जप क्यों करते हैं?		
11.	हम चार नियमों का क्यों पालन करते हैं?		
12.	हम और पुण्य कार्यों की बजाए हरे-कृष्ण का जप क्यों करते हैं? हरे कृष्ण जप करना और पुण्य कार्यों के मध्य क्या असमानताएँ हैं?		
13.	जी.बी.सी. की स्थिति और जिम्मेदारियाँ क्या हैं?		
14.	शरीर और आत्मा में क्या अंतर है?		
15.	इस्कॉन क्या है और किसी को इसकी शरण में क्यों रहना चाहिए?		
16.	ऐसा कहा जाता है कि हरिनाम दीक्षा स्वीकार करने के बाद शिष्य को अपने आध्यात्मिक गुरू के आदेशों का पालन इस जीवन में और हर जीवन में करना होगा। क्या आप इस पर विश्वास करते हैं? क्या किसी को आध्यात्मिक गुरू स्वीकार करने की जरूरत है।		
17.	क्या आप पवित्र नाम के प्रति 10 अपराधों को विस्तार से बता सकते हैं?		
18.	भगवान चैतन्य महाप्रभु के हरे कृष्ण संकीर्तन आदोलन के प्रसार में आध्यात्मिक गुरू की सहायता के लिए आप क्यों सहमत हैं?		
19.	दीक्षा के पश्चात् क्या 16 माला से कम जप करना उचित है, जबकि और बहुत सेवाएँ हों? अगर कोई माला जप कम कर पाता है, तो उसे क्या करना चाहिए?		

20.	आपके जीवन का क्या उद्देश्य है, जिसे आप जीवन के अंत में प्राप्त करना चाहते हैं?		

सूचनाः जो पढ़े-लिखे नही हैं (स्तर 4 और उसके नीचे, उन्हें जरूरी पढ़ाई से छूट दी जाती है, लेकिन इस मामले में उन्हें जहाँ तक सम्भव हो, शास्त्रों को सुनना चाहिए और सरल परीक्षा के उत्तर बोल कर देने चाहिएँ। उन्हें जरूरी तत्वज्ञान अच्छे से पता होना चाहिए।

<u>हरिनाम दीक्षा के लिए प्रस्ताव</u>

‘‘ मैं जयपताका स्वामी से दीक्षा क्यों लेना चाहता हूँ “

आध्यात्मिक गुरू को विस्तार से बताते हुए एक प्रस्ताव लिखें, कि आप उनसे दीक्षा क्यों लेना चाहते हैं और आप क्यों चाहते हैं कि वह आपको अपना शिष्य स्वीकार करें। आप व्यक्तिगत तौर पर बता सकते हैं कि किस कारण आपका विश्वास उनमें स्थिर और दृढ़ हो पाया। कृपा करके बताएँ कि दीक्षा के पश्चात श्रील प्रभुपाद की उद्देश्य पूर्ति ‘‘**हरिनाम संकीर्तन आन्दोलन का पूरे विश्व में प्रसार**’’ हेतु आध्यात्मिक गुरू की भक्तिमय सेवा में आप किस प्रकार सहायता करने की योजना रखते हैं। आप किस प्रकार एक शिष्य की तरह, एक दृढ़ और उचित सम्बन्ध बढ़ाने की और उसे कायम रखने की इच्छा रखते हैं। आप नीचे दी गई जगह इस्तेमाल कर सकते हैं, या एक अलग पृष्ठ पर लिख सकते हैं।

परम पूज्यनीय श्रील जयपताका स्वामी के द्वारा हरिनाम -दीक्षा के सम्बन्ध में प्रार्थियों के लिए तत्वज्ञान परीक्षा

(जी.बी.सी. द्वारा बना प्रश्न पत्र सम्मिलित है)

1. ऐसा कहा जाता है कि जब कोई एक बार हरिनाम दीक्षा एक प्रामाणिक गुरू से स्वीकार करता है, उसके पश्चात् उसे आगे के मन्त्र भी सिर्प उन्हीं से स्वीकार करने चाहिएँ (जब तक वह उपस्थित हैं) और किसी और से आगे की दीक्षा स्वीकार करना एक बड़ा अपराध है? क्या आप इस पर विश्वास करते हैं?

2. कोई गुरू की भगवान के समान पूजा क्यों करता है? क्या गुरू भगवान हैं? प्रामाणिक गुरू किस प्रकार स्वयं को भगवान कृष्ण और शिष्य के सम्बन्ध में देखते हैं?

3. क्या आप विश्वास करते हैं, कि आध्यात्मिक गुरू परम सत्य बोलते हैं? यह कैसे सम्भव है कि जो उपदेश भगवान कृष्ण ने 5000 साल पहले दिया, वही आज आध्यात्मिक गुरू प्रस्तुत कर रहे हैं?

4. शास्त्रों के अनुसार, आध्यात्मिक गुरू का त्याग कब करना चाहिए?

5. एक शिष्य की क्या योग्यताएँ और जिम्मेदारियाँ हैं?

6. श्रील प्रभुपाद की इस्कॉन में क्या अद्वितीय स्थिति है? उनका इस्कॉन में संस्थापकाचार्य की तरह और उनके सारे अनुयायियों के लिए प्रमुख शिक्षा गुरू की तरह आदर क्यों किया जाता है? ऐसा कहा जाता है कि हरिनाम दीक्षा स्वीकार करने के पश्चात् दीक्षार्थी गुरू परम्परा से जुड़ जाता है। क्या आप श्रील प्रभुपाद के निर्देशों के अनुसार सेवा करने के लिए दृ .- संकल्प हैं? क्यों?

7. आप भगवान कृष्ण को परम भगवान क्यों स्वीकार करते हैं? भगवान कृष्ण के पवित्र नाम की महिमा के बारे में कुछ बताएँ। हम हरे कृष्ण महा- मंत्र का जप क्यों करते हैं?

8. हम चार नियमों का पालन क्यों करते हैं?

9. हम और पुण्य कार्यों की बजाए हरे-कृष्ण का जप क्यों करते हैं? हरे कृष्ण जप करना और पुण्य कार्यो के मध्य क्या असमानताएँ हैं?

10. जी.बी.सी. की क्या स्थिति है?

11. शरीर और आत्मा में क्या अंतर है?

12. इस्कॉन क्या है और किसी को इसकी शरण में क्यों रहना चाहिए?

13. ऐसा कहा जाता है कि हरिनाम दीक्षा स्वीकार करने के बाद शिष्य को अपने आध्यात्मिक गुरू के आदेशों का पालन इस जीवन में और हर जीवन में करना होगा। क्या आप इस पर विश्वास करते हैं? क्या किसी को आध्यात्मिक गुरू स्वीकार करने की जरूरत है।

14. अगर कोई पापपूर्ण कार्य की योजना बनाता है और फिर उसको निष्फल करने के लिए भगवान के पवित्र नाम का जप करता है, क्या इस प्रकार वह पापपूर्ण फल से मुक्त हो जाएगा? क्यों ?

15. ऐसा कहा जाता है कि दीक्षा स्वीकार करने के पश्चात् हर किसी को भगवान चैतन्य महाप्रभु के संकीर्तन आन्दोलन को फैलाने के लिए आध्यात्मिक गुरू की सहायता करनी चाहिए। क्या आप इसको करने के लिए सहमत हैं? इसको करते हुए क्या ईर्ष्यालू व्वक्तियों को हरि-नाम की महिमा का जबरदस्ती प्रचार करना चाहिए? विस्तार पूर्वक बताएँ।

16. दीक्षा स्वीकार करने के पश्चात् एक शिष्य का, भक्तिमय सेवा और गुरू तथा कृष्ण के प्रति समर्पण को बढ़ाने के लिए क्या कर्तव्य होना चाहिए?

परम पूज्य श्रील जयपताका स्वामी द्वारा हरिनाम-दीक्षा के सन्दर्भ में प्रश्न-पत्र (Ver 1.1)

1. जो आपके लिए उपयुक्त हो? (उन सब पर ठीक का चिन्ह लगाएँ)

- ❑ मैं मन्दिर, आश्रम में रहकर वहाँ सेवा करता/करती हूँ।
- ❑ मैं घर में रहकर, नियमित तौर पर भक्तिमय सेवा नीचे लिखे स्थान पर करता/करती हूँ।
- ❑ इस्कॉन मन्दिर (अगर हाँ, मन्दिर का नाम--------------------------)
- ❑ नाम हट्ट (अगर हाँ, नाम हट्ट का नाम--------------------------)
- ❑ मैं एक भक्ति वृक्ष समूह से भी सम्बन्धित हूँ और नियमित तौर पर उसमें उपस्थित होता/होती हूँ।
- ❑ अन्य-----------------

2. क्या आपने पिछले एक साल से हरे कृष्ण महामन्त्र का 16 माला का जप किया है?
(हाँ / नाँ)
अ. एक महीने में औसत आपने कितनी बार नही किया? --------दिन
ब. जितनी माला का जप आप नही कर पाए, तो उसे क्या आपने पूरा किया?
(हाँ / नाँ)

3.अ. क्या आप मन्दिर में मंगल - आरती में नियमित तौर पर उपस्थित रहते है?
(हाँ / नाँ)
ब. एक महीने मैं औसत आप कितनी बार उपस्थित नही रहे?......................दिन

4. पिछले 12 महीनों में, क्या आपकी भक्तिमय सेवा स्थिर थी? (हाँ / नाँ)
आपकी क्या सेवाएँ हैं ?
....
....
....

5. क्या कभी आपने आध्यात्मिक अधिकारी की अनुमति के बिना मन्दिर छोड़ा, नाम हट्ट में जाना छोड़ा या फिर अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना बंद किया? (हाँ / नाँ)

6. क्या आप हर सुबह जल्दी स्नान करते हैं और साफ सुथरा रहते हैं? (नाखून, बाल, कपड़े इत्यादि)
(हाँ / नाँ)

7. क्या पिछले 2 सालों में आप पर कभी जुर्म साबित हुआ है, या फिर आप किसी बेईमानी जैसे चोरी, राज्य के नियमों को तोड़ना से सम्बन्धित थे? क्या आप बाल दुर्व्यवहार अपराधी हैं? (हाँ / नाँ)
अगर हाँ तो विवरण दीजिए।

8. क्या पिछले 2 सालों में आपने किसी वरिष्ठ भक्त से झूठ बोला? (हाँ / नाँ)

9. आपने कितनी बार निम्नलिखित पुस्तकें पढ़ी हैं:-
अ. भगवदगीता यथारूप...........................
ब. श्रीमदभागवतम पहला स्कन्ध................
स. श्रीमदभागवतम (2-5 स्कन्ध) (या कोई और स्कन्ध)...................................
द. श्रीमदभागवतम (6-9 स्कन्ध) (या कोई और स्कन्ध)....................................
च. कृष्णा पुस्तक ....
छ. चैतन्य चरितामृत (अगर सब नहीं, तो कौन सा भाग..............)
ज. भगवान चैतन्य की शिक्षाएँ....................
झ.भक्तिरसामृत सिन्धु ....
ट. आपने और कौन सी बी. बी. टी. पुस्तक प ़ी है?

10. क्या आप भौतिक उत्तेजना और मानसिक तनाव से पीड़ित हैं। (हाँ / नाँ)

11. क्या पिछले 2 सालों में आपने कभी आत्म हत्या या इस्कॉन को छोड़ने का प्रयास किया?
(हाँ / नाँ)

12. क्या आप अभी किसी प्रकार की इन्द्रिय- तृप्ति से उतेजित हैं, जिससे आपको लगता है कि आपको नीचे गिरने का खतरा है? अगर हाँ तो विवरण दीजिए। (हाँ / नाँ)

....

....

13. क्या आप वैष्णव अपराध या भक्तों की व्यर्थ की निन्दा से परे रहते हैं? (हाँ / नाँ)
अगर नहीं तो विवरण दीजिए।

....

....

14. ऋतविक के बारे में
अ. क्या आपने ऋतविक के बारे में सुना है?
ब. किस माध्यम से

- अखबार
- इन्टरनेट
- ऋतविक मानने वालें ने मेरे से बात की
- भक्तों ने मुझे सावधान किया

स. अगर आपने सुना है, तो आपकी ऋतविक के बारे में क्या राय है?

....

....

द. क्या आप ऋतविकों के प्रचार से सन्देहस्पद हैं या फिर ऋतविक में विश्वास रखते हैं?
(हाँ / नाँ)

15. जो भक्त मन्दिर से बाहर रहते हैं, उनके लिए
अ. आप कितनी बार मन्दिर दर्शन के लिए आते हैं?.

....

ब. आप कितनी बार नाम हट्ट सभा में जाते हैं?......

....

स. क्या आप नियमित साधना दिनचर्या के अन्तर्गत सुबह सूर्य उगने से पहले उठकर जप करते हैं?
(हाँ / नाँ)

द. आप नियमित तौर पर किस इस्कॉन मन्दिर या नाम हट्ट संग में जाते है।

....

....

छ. क्या आप किसी और धार्मिक संस्था से सम्बन्धित हैं? किससे? आप उनके लिए किस तरह की सेवा करते हैं?

....

....

ज. क्या आप विवाहित हैं? (हाँ / नाँ)

झ. अगर आप अविवाहित हैं, तो क्या निकट भविष्य में आपकी विवाह की योजना है? (हाँ / नाँ)

त. अगर आप अविवाहित हैं और विवाह नही करना चाहते, तो क्या आप निकट भविष्य में मन्दिर से जुड़ना चाहते हैं। (हाँ / नाँ)

थ. क्या आप अपनी आय मे से कुछ हिस्सा भगवान कृष्ण की सेवा में अर्पित करते हैं? (हाँ / नाँ)
कितना...

न. क्या आप अपनी भक्तिमय सेवा को बढ़ाने के लिए कुछ क्षमता, योजना या विचार रखते हैं? अगर हाँ तो क्या

....

....

प. क्या आप अक्सर प्रसाद के अतिरिक्त और कुछ नही खाते? अगर नहीं तो विवरण दीजिए। .... फ. निम्नलिखित में से क्या आपके लिए आध्यात्मिक परेशानी हैं? ○ अ. संसारी दूरदर्शन देखना ○ ब. संसारी फिल्म देखना ○ स. व्यर्थ की बातें करना और अफवाह उड़ाना ○ द. अर्नथक खेल-कूद में भाग लेना ○ ध. संसारी चीजों के लिए अत्यधिक प्रयास करना। ○ ---------------------------- 16. **अतिरिक्त प्रश्न उनके लिए, जो विवाह करेंगें** अ. अगर आप विवाह करेंगे, तो क्या आप सिर्फ एक दीक्षित वैष्णव भक्त (इस्कॉन) से विवाह की कोशिश करेंगे? अगर ऐसा सम्भव नही हुआ, तब एक पुण्य, शाकाहारी व्यक्ति से विवाह करेंगे? (हाँ / नाँ) ब. क्या आप ऐसा निर्णय लेने से पहले इस्कॉन अधिकारी और गुरू से पूछेगें? (हाँ / नाँ) स. क्या आप कृष्ण भावनाभावित जीवन के नियम और कृष्ण भावनाभावित नियंत्रित शारीरिक सम्बन्ध के बारे में जानते हैं? (हाँ / नाँ) द. ऊपर (स) जो लिखा है, क्या आप उसके लिए सक्षम महसूस करते हैं? (हाँ / नाँ)	च. क्या आपको लगता है कि वैवाहिक जीवन आपकी सेवा पर प्रभाव डालेगा। (हाँ / नाँ) अगर हाँ, तो कैसे? ------------------------------------- ------------------------------------- ------------------------------------- छ. क्या अपकी सगाई हो चुकी है? (हाँ / नाँ) ज. क्या अपकी शादी हो चुकी है? (हाँ / नाँ) झ. भविष्य में विवाह सम्बन्ध के प्रति अपनी स्थिति को प्रकट कीजिए। ....

प्रश्न, उन गृहस्थों के लिए जो अपनी पत्नी के साथ रहते हैं।

(अगर आप गृहस्थ नही हैं, तो खाली छोड़ दें) **सूचना:** चूँकि यह व्यक्तिगत विवरण है, जो कि हर किसी को बताने के लिए उचित नही है। इसलिए इसे आप एक बन्द लिफाफे में अपने गुरू को दे सकते हैं।

17. व्यवहारिक नियंत्रित पारिवारिक जीवन

अ वैष्णव गृहस्थ जोकि शास्त्रों के अनुसार शारीरिक सम्बन्ध सिर्फ कृष्ण भावना भावित बच्चों को पैदा करने के लिए करते हैं, वह भगवान कृष्ण की भक्तिमय सेवा कर रहे हैं और उन्हें गृहस्थ ब्रह्मचारी मानना चाहिए।

ऐसा कोई नियम नही है कि एक गृहस्थ के कितने बच्चे हो सकते हैं, लेकिन ऐसा विधान है कि बच्चा पैदा करने के लिए आप एक महीने में एक बार प्रयास कर सकते हैं। इसको गर्भधान संस्कार कहते हैं और उस दिन आध्यात्मिक गतिविधियाँ ब ़ानी चाहिएँ और ज्यादा माला का जप करना चाहिए और गुरू तथा कृष्ण से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह एक शुद्ध बाल भक्त को भेजें।

अ क्या आप गृहस्थ जीवन के ऐसे स्तर का पालन करते हैं?

हाँ / नाँ / कोशिश कर रहे हैं।

ब. अगर आप इस स्तर का पालन नही कर रहे, तो क्या आप ऐसा करने के लिए तैयार हैं?

हाँ / नाँ / कोशिश करेगें

स. अगर आप किसी परिस्थिति की वजह से ऐसे स्तर का पालन करने के लिए सक्षम नही हैं, तो दीक्षा के पश्चात् क्या आप ज्यादा सम्बन्धों को रोकने के लिए प्रतिबन्धित शारीरिक सम्बन्ध के अन्तर्गत परिवार नियोजन के सिर्फ प्राकृतिक तरीकों का इस्तेमाल करने के लिए संकल्प लेगें?

हाँ / नाँ

द. अगर आप ऊपर दिए गए स्तर का पालन करने में अक्षम हैं तो कृपा करके बताइए कि आपको ऐसा करने में किन बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जो कि आपको ऐसा करने से रोकता है।

जो उचित हो उस पर निशान लगाएँ, या फिर अंकित करें कि आप गुरू को व्यक्तिगत तौर पर बताना चाहेगें।

- ○ मेरा/मेरी पति/पत्नी भक्त की तरह कार्य नही कर रहे हैं, इसलिए मुश्किल है।
- ○ हमें बच्चे नहीं चाहिएँ, लेकिन हम पूरी तरह से अलग नही रह सकते।
- ○ हमें बच्चा नही हो सकता
- ○ वैवाहिक सम्बन्ध को कायम रखने के लिए ज्यादा शारीरिक सम्बन्धों की आवश्यकता है।
- ○ मैं व्यक्तिगत तौर पर इस स्तर के नियम-पालन के अक्षम हूँ।
- ○ कोई और बाधाा
- ○ मैं व्यक्तिगत तौर पर गुरू को बताना चाहूँगा।

च. अगर आप ऊपर दिए गए स्तर का पालन करने में अक्षम हैं, तो आप नीचे दिए गए किस स्तर का पालन करने में सक्षम हैं। (जो उचित है, उन सब पर चिन्ह लगाएँ, या अंकित करें)

- ○ सामान्यत: पालन करेंगे लेकिन कभी-कभी नही कर सकते।
- ○ महीने में एक बार सम्बन्ध
- ○ महीने में एक से ज्यादा बार सम्बन्ध
- ○ मनु संहिता के अनुसार सम्बन्ध (गैर एकादशी इत्यादि)
- ○ वैवाहिक जीवन के अन्तर्गत बिना किसी कड़े नियम के सम्बन्ध
- ○ कोई और कारण
- ○ मैं व्यक्तिगत तौर पर गुरू को बताना चाहूगाॅं।

18. परिवार नियोजन के बारे मे अ. क्या आप आधुनिक परिवार नियोजन की विधि ईस्तेमाल करते हैं या फिर करना चाहते हैं या भविष्य मे गर्भपात कराएगें? हाँ / नाँ ब. क्या आप या आपकी पत्नी ने बच्चा न पैदा हो, ऐसा ऑप्रेशन कराया है? हाँ / नाँ स. क्या आप ऐसा संकल्प लेते हैं, कि आप भविष्य मे ऐसा ऑप्रेशन या गर्भपात नही करायेगें? हाँ / नाँ 19. अ. क्या आप अपने ऊपर निर्भर बच्चों को कृष्णभावना भावित भक्त बनने का प्रशिक्षण दे रहे है? हाँ / नाँ ब. क्या आप उन्हें सिर्फ प्रसादम् और शाकाहारी भोजन दे रहे हैं? हाँ / नाँ	

हरिनाम- दीक्षा प्रार्थी की योग्यता

जाँच सूचि मुख्य पृष्ठ

स्थान....................
तिथि......................
दीक्षा क्रमांक #

प्रार्थी का नाम...

मन्दिर / नाम हट्ट (जिसने संस्तुति की)...

संख्या.........................(जयपताका स्वामी सम्पर्क / शिष्य आंकड़े)

- ❑ संस्तुति पत्र
- ❑ व्यवहारिक जाँच सूचि (भाग..................फिर से देखें)
- ❑ तत्वज्ञान परीक्षा/ जाँच सूचि (भाग..................फिर से देखें)
- ❑ व्यक्तिगत प्रश्न पत्र (भाग..................फिर से देखें)
- ❑ प्रस्ताव - उन्हें अपनी इच्छा के दीक्षा गुरू के प्रति विश्वास/उत्साह क्यों है(Ok/ Review)
- ❑ दीक्षा प्रण
- ❑ शिष्य गणना फार्म/व्यक्तिगत आंकड़े और पता (अगर संस्तुति पत्र पर नही है)
- ❑ साक्षात्कार आभास
- ❑ आध्यात्मिक नाम वरीयता प्रश्न (ब्रज लीला, गौर लीला, रामलीला, ...)
- ❑ चित्र

परीक्षक/निरीक्षक की अनुमति

- ○ पूर्ण
- ○ अपूर्ण हस्ताक्षर...................

साक्षात्कार के बाद आध्यात्मिक गुरू का निर्णय

- ❑ दीक्षा प्राप्ति के लिए स्वीकार किया (अतिरिक्त समीक्षा नीचे दी गई है)
- ❑ दीक्षा के लिए अस्वीकार किया। निम्नलिखित में सुधार की आवश्यकता है।

1 ....
2 ....
3 ....
4 ....

धन्यवाद

.

आध्यात्मिक गुरू के हस्ताक्षर